जैन साहित्य एवं प्राचीन भारतीय इतिहास

जैन ग्रंथ एवं उनका ऐतिहासिक महत्व

- जैन धर्म-ग्रंथों में प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रचुर सामग्री समाहित है।
- राजबली पाण्डेय लिखते हैं, "एक दृष्टि से कहा जा सकता है कि बिना जैन ग्रंथों के अध्ययन के भारतीय संस्कृति के इतिहास में पूर्णता नहीं आ सकती है क्योंकि इस साहित्य में हमें प्राचीन भारत के कुछ ऐसे पक्षों का परिचय मिलता है जिनकी ब्राह्मण या बौद्ध साहित्य में या तो चर्चा ही नहीं है या अगर है तो बहुत अल्प।"
- कुछ बौद्ध ग्रंथों (जैसे मंजुश्री मूलकल्प, जिसमें बौद्ध दृष्टिकोण से गुप्त सम्राटों का वर्णन मिलता है, और महावस्तु, जिसमें महात्मा बुद्ध को अद्भुत शक्ति समन्वित स्वरूप में दिखाया गया है) से भी प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में अति महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- बौद्ध/ऐतिहासिक ग्रंथों के संदर्भ में यह भी स्पष्ट किया गया है कि इनकी रचना किसी एक काल या लेखक की नहीं होती है।
- प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में अनेक ऐसे तथ्यों का वर्णन प्राकृत भाषा में लिखित जैन साहित्य में मिलता है, जिनका वर्णन ब्राह्मण एवं बौद्ध साहित्य में या तो किया ही नहीं गया है या फिर बहुत कम किया गया है।

जैन 'आगम' साहित्य एवं उसकी संरचना

- जैन ग्रंथों में 'आगम' साहित्य सर्वप्रमुख है, जिनकी रचना 400 ईसा पूर्व से 600 ईसवी काल में हुई है।
- जैन साहित्य में 'जैन आगम' का स्थान सर्वोपरि है जिसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 पकीर्ण, 6 छंदसूत्र, नन्दिससूत्र, अनुयोगद्वार और मूल सूत्र सम्मलित हैं।
- इन ग्रंथों की रचना किसी एक व्यक्ति द्वारा तथा किसी एक काल में नहीं हुई थी।
- इन जैन आगम ग्रंथों को वर्तमान स्वरूप वल्लभी में 513 ईस्वी अथवा 526 ईस्वी में आयोजित एक सभा में प्रदान किया गया था।
- यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से इस साहित्य में अनेक दोष दिखाई देते हैं, किन्तु फिर भी ये ग्रंथ पूर्णतः अप्रभाविक नहीं हैं।

प्रमुख जैन ग्रंथ और उनमें वर्णित विषय

- जैन साहित्य के 'आचारांग सूत्र' में जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का वर्णन मिलता है।
- 'भगवती सूत्र' में महावीर स्वामी के जीवन के विषय में तथा छठी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तर भारत के महाजनपदों का वर्णन मिलता है।
- 'औपपातिक सूत्र' और 'आवश्यक सूत्र' में अजातशत्रु के धार्मिक विचारों का वर्णन मिलता है।
- 'भद्रबाहु चरित्र' (या भद्रबाहुचरित) चंद्रगुप्त मौर्य तथा तत्कालीन जैन समाज के सम्बन्ध में अति महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करता है तथा इसके राज्यकाल की घटनाओं का वर्णन करता है।
- 'परिशिष्टपर्वन' (या परिशिष्ट पर्व), जिसकी रचना बारहवीं शताब्दी में हेमचंद्र (हेमचन्द्र) द्वारा की गई, जैन साहित्य का अति महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री समाहित है।
- 'कालका पुराण' एक ऐसा जैन ग्रंथ है जिसमें मालवा का तत्कालीन चित्रण मिलता है।
- इनके अतिरिक्त त्रिलोक प्रजटित, कथाकोष, लोक विभाग, आराधना कथाकोष, स्थविरावली, कल्पसूत्र, पुण्याश्रय कथाकोष आदि अन्य प्रसिद्ध जैन ग्रंथ हैं।
- वसुदेवहिण्डी (वसुदेव हिण्डी), बृहत्कल्पसूत्र भाष्य (बृहत्कल्प सूत्र भाष्य), आवश्यकचूर्णी (आवश्यक चूर्णि), ज्ञाताकर्म, कुलिका पुराण कथाकोष आदि अन्य महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ हैं।
- इन सभी ग्रंथों का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इनसे प्राचीन भारत के इतिहास, संस्कृति और समाज पर व्यापक प्रकाश पड़ता है।

जैन साहित्य और आगम ग्रंथों में संकलित सामग्री प्राचीन भारतीय इतिहास की कई अनछुए पहलुओं को सामने लाती है। प्राकृत भाषा में रचित जैन ग्रंथों की यह विशेषता है कि इनमें वर्णित अनेक तथ्य ब्राह्मण और बौद्ध साहित्यों में पूरी तरह अनुपलब्ध या अत्यंत अल्प मात्रा में हैं। वल्लभी वाचन (513 या 526 ईस्वी) के माध्यम से इन ग्रंथों को व्यवस्थित रूप दिया गया, जिससे इनका अध्ययन और अधिक प्रामाणिक हो गया। महावीर स्वामी के जीवन वृत्त, जैन मुनियों के आचार-विचार, महाजनपदों की स्थिति, और मौर्यकालीन इतिहास (विशेषकर चंद्रगुप्त मौर्य से जुड़े प्रसंग) को समझने के लिए ये ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से अमूल्य हैं। इस प्रकार, भारतीय संस्कृति और प्राचीन इतिहास के संपूर्ण अध्ययन हेतु जैन साहित्य का अध्ययन अनिवार्य एवं अत्यंत उपयोगी है.